माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी विशिष्ट	0 0 1	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

[redacted]

सरल क्रमांक 319- 1613525

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

X	2	9	7	7	2	5	5	7	3

शब्दों में

X	दो	नौं	सात	सात	दो	पांच	पांच	सात	तीन

दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में X शब्दों में X

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 02

ग :– परीक्षा का दिनांक 02 03 2019

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्डरी सर्टि.परीक्षा
केन्द्र क्र. 771002

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
02/03/19 SUSHIL BHAMARE	

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नही पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
Sun... ...l V.No. 12..9	परीक्षक ... Mo. ... परीक्षक क्र. 12471

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक		(अंकों में)
1			
2			
3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			
13			
14			
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24			
25			
26			
27			
28			

कुल प्राप्तांक शब्दों में

योग पूर्व पृष्ठ के अंक कुल अंक

प्रश्न क्र.

उत्तर - 1

1 रेवती

2 बालकृष्ण शर्मा नवीन

3 गानपन

4 प्रगतिवाद

5 ध्यान न देना

उत्तर - 2

i) स) जयकुमार जलज

ii) अ) सातवें वर्ष में

iii) स) चिरगाँव

iv) ब) कमल

v) द) घी के दिये जलाना

(3) 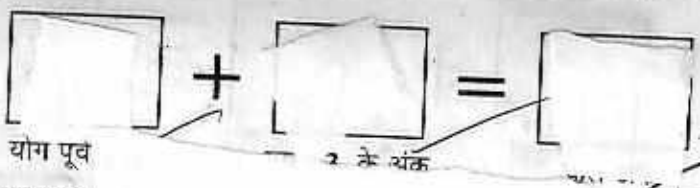

प्रश्न क्र.

i) सत्य

ii) सत्य

iii) सत्य

iv) सत्य

v) असत्य

B
S
E

उत्तर - 4

अ	ब (उत्तर)
i) मंगल वर्षा	भवानी प्रसाद मिश्र
ii) अध्यक्ष महोदय	व्यंग्य विधा
iii) मेरे जीवन के चित्र	डॉ रामकुमार वर्मा
iv) लक्ष्यार्थ	संदेह अलंकार
v) स के अंग	चार

+ = कुल अंक

प्रश्न क्र.

i) मध्यप्रदेश की दो बोलियाँ मालवी व बघेली हैं।

ii) मीराबाई के अनुसार शरीर नश्वर होता है। वह एक दिन मिट्टी में मिल जायेगा इसलिए देह पर गर्व नहीं करना चाहिए

iii) व्यतिरेक अलंकार

iv) गीता व स्वधर्म निबंध के लेखक विनोबा भावे जी हैं।

v) एक नैनो मीटर मानव बाल के 50 हजारवें हिस्से के बराबर होता है।

B
S
E

उत्तर-6 अथवा

भारत एक महान देश है। यह विश्व का सबसे पुराना राष्ट्र है। महत्ता कविता के कवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार प्राचीन काल में विश्व के सभी देश भारत में ऋषि, मुनियो का प्रवचन सुनने व ज्ञान अर्जित करने आते थे। भारत देश से ही विश्व के अन्य देशो तक ज्ञान प्रसारित हुआ है। इसलिए भारत को एक महान देश की श्रेणी में रखा गया है।

उत्तर-7

कबीर दास जी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास हेतु

5 [ ] + [ ] = [ ]
योग पृष्ठ ... कु. अंक
मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

उन्ही साधु की स... ने का उपदेश देते है। उनके अनुस साधु की संगति में वही व्यक्ति रहता है जिसको साधु की संगति का महत्व पता है, दुर्जन व्यक्ति कभी भी साधु की संगति में नहीं रहना चाहेगा।

उत्तर-8

बंसत प्रकृति की ~~लाव~~ मनोरम छाया है, जो पृथ्वी पर पड़ती है। कवि के अनुसार ~~अर~~ अगर धरती मानव है तो बंसत नवला है। जब धरती पर मानव प्रसन्न होता है तभी बंसत ...ता है।

उत्तर 9 अथवा

बिजली की चमक देखकर एक सखि, दूसरी सखि से कहती है कि हे सखि। भाग बिजली चमक रही है अर्थात वर्षा होने वाली है। बंसत के आने से पृथ्वी में प्यार के अंकुश फूटने लगे है। पंछी भी प्रसन्नता के साथ उड़ रहती है व दादुर भी वर्षा आने के कारण उछलने-कूदने लगा है।

उत्तर - 10

कवि विहारीलाल जी के अनुसार इस दुनिया में कोई भी वस्तु सुंदर व कुरूप नहीं है। यह तो बस मानव की रुचि पर निर्भर करता है। उसे जिस वस्तु पर रुचि होती है वह वस्तु उसे सुंदर लगती है व उसे जिस वस्तु पर रुचि नहीं

प्रश्न क्र.

होती वह वस्तु उन्हें कुरूप लगती है। इस कारण एक ही वस्तु किसी को सुंदर और किसी को कुरूप नजर आती है।

उत्तर-11

गौतम बुद्ध संसार के दुःखो का कारण ढूंढने, एक दिन आधी रात को अपनी पत्नी यशोधरा व बालक राहुल को छोड़कर पहाड़ी, वनो में व संसारिक जीवन से दूर चले गये थे। उनके विरह की अग्नि में उनकी पत्नी यशोधरा जल रही थी।

उत्तर-12 अथवा

महाभारत का युद्ध कौरवो व पाडवो के बीच था जो भाई-भाई थे। महाभारत के युद्ध में स्वजन सम्बन्धियो की चार पीढ़िया एकत्र हुई थी। यह युद्ध दादा, बाप, बेटे, भाई आदि के बीच हो रहा था। यह एक विनाशकारी युद्ध था।

उत्तर-13

'लिखने के लिए मैंने कभी नहीं लिखा' से लेखक उपाध्याय जी का तात्पर्य है कि उन्होने लेखन कार्य को पूँजी का स्त्रोत मानते हुये या दूसरे के कहने पर कभी नहीं लिखा। जब उनके मन में कोई भाव जाग्रत होता है तो

योग + = कुल अंक

मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

वे उसे लिख दे... जो लेखन कार्य स्नेह पाने के लिए करते हैं और यही उनकी रायल्टी है।

उत्तर-14 अथवा

कवि सोम ठाकुर जी के अनुसार आज भारत के लोग उनका गौरवशाली इतिहास को भुलाकर भौतिक सुख-सुविधा में लीन हो गए है। उनका मन जीवन भले ही सुखमय है पर वे मन से तनावग्रस्त है। वे पाश्चात्य सभ्यता के अंधाधुनिकरण में अपनी गौरवशाली परम्परा बिसरा चुके है। अत: उनका शरीर बाह्य से सजा हुआ व सुंदर है परन्तु अंदर से व मन से उन वे अंधकार से घिरे हुए है। आयातित अंधकार से सोमठाकुर जी का यही अभिप्राय है।

उत्तर-15

i) अब आपका स्वास्थ्य कैसा है?

ii) उसके होश उड़ गये।

उत्तर-16 अथवा

1. सर्गबद्ध व सम्बद्ध रचना सर्गों
2. 8 व 8 से अधिक सर्गों का प्रयोग होना अनिवार्य
3. छप्पय, सोरठा, दोहा आदि छंद विधाओं का प्रयोग
4. वीर रस, श्रृंगार रस, आदि रसो का प्रयोग
5. नायक उदात्त व महान। उदा० रामचरित मानस साकेत

प्रश्न क्र.

उत्तर-16

जब किसी काव्य रचना में बिना कारण या भाव के भी कार्य होना बताया जाता है वहाँ विभावना अलंकार होता है।

सुनै बिनु काना, चलै बिदु पैंदा।
कर बिनु करम करै बिधि नाना॥

यहाँ बिना कारण के कार्य हो रहा है।

B S E

उत्तर-17

प्रस्तुत पंक्ति में रामदरश मिश्र जी कहना चाहते हैं कि वो छोटे आदमी हैं छोटा ही बना रहना चाहते हैं। रामदरश जी एक अल्पकांक्षी व्यक्ति हैं, वे कम चीजों व छोटी बातों में ही खुश हो जाते हैं। उन्नति के लिए भाग-दौड़ करके अपने आप को लहुलुहान कर लेने उन्हें रास नहीं आता। तेज रफ्तार जिंदगी में उन्हें जब भी भाग दौड़ करना पड़ा जैसे- पढ़ाई के लिए, नौकरी के लिए व घर के लिए तो उन्होंने संघर्ष किया व इस दौड़ में शामिल भी हुए परंतु उन्नति के लिए योजनाएँ बनाना उन्हें पसंद नहीं आया। वे अपनी जिंदगी के हर पल को खुशी से जीना चाहते हैं। बड़ा व्यक्ति, अभिनेता, आदि बनने की उनके मन में आकांक्षा नहीं है। इसलिए उन्होंने कहा है

"मैं छोटा व्यक्ति हूँ छोटा ही बना रहना चाहता हूँ।"

9

प्रश्न क्र.

उत्तर -18

भाषा

भाषा → सार्थक शब्दो व संकेतो के समूह को भाषा कहते हैं।

विभाषा → विभाषा को उपभाषा भी कहते हैं। विभाषा भाषा का छोटा व सीमित रूप है।

भाषा व विभाषा में अंतर

भाषा	विभाषा
1. भाषा के क्षेत्र सबसे विस्तृत होता है।	विभाषा का क्षेत्र बोली से विस्तृत व भाषा से कम व्यापक होता है।
2. भाषा का उपयोग साहित्यिक कार्यों के साथ-साथ प्रशासनिक कार्यों में होता है। अतः यह महत्त्वपूर्ण है	विभाषा का प्रयोग केवल साहित्यिक रचना व कार्यों मे होता है।
3. भाषा बोली का पूर्ण विकसित रूप होता है।	विभाषा भाषा का अर्द्ध विकसित रूप होता है।
4. विभाषा भाषा बनती है।	बोली उन्नति करके विभाषा बनती है।
5. उदा• हिन्दी, अंग्रेजी, तमिल आदि	उदा• राजस्थानी, बुन्देली, ब्रज आदि।

अंक = कुल अंक

प्रश्न क्र.

शृंगार रस → सहृदय के हृदय में स्थित स्थायी भाव रति का जब अनुभाव, संचारी भाव के साथ मिलन होता है तो शृंगार रस की उत्पत्ति होती है। इसे रसराज भी कहा जाता है।

स्थायी भाव → रति

उदाहरण :-

" राम का रूप निहारति जानकी,
कंगन के नग की परिछाही,
याके सब सुधि भूल गयीं टेक कर रहि,
पल टारत नहीं नाहि॥"

" मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरो न कोई
जाके सिर मोर मुकुट मोरे पति हुई होई॥"

उत्तर - 20

द्विवेदी युग (1900 - 1920 ई.)

भारतेन्दु युग के बाद जो युग प्रारंभ हुआ उसे द्विवेदी युग कहा जाता है। इस युग के प्रमुख कवि महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। द्विवेदी जी 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक थे। इन काव्य रूपों को सरस्वती पत्रिका में देखा जा सकता है।

प्रश्न क्र.

'भारतेन्दु युग मे जिस साहित्यक प्रवृत्तियों व रूपो के बीज बोये गये थे वे द्विवेदी युग में खूब फले-फूले।'

द्विवेदी युग की विशेषताएँ

- → अंधविश्वासो रूढ़ियो का विरोध
- → वर्णन प्रधान कविताएँ
- → देश-प्रेम
- → प्रकृति चित्रण

① अंधविश्वासो व रूढ़ियो का विरोध → इस युग के कवियो ने उस समय समाज मे व्याप्त अंधविश्वासो व रूढ़ियो पर तीखे प्रहार करते हुए मानव को जाग्रत करने का प्रयास किया।

② वर्णन प्रधान कविताएँ → यह इस युग की प्रमुख विशेषता है। इस युग के कवियो ने वर्णन प्रधान कविताएँ लिखि।

③ प्रकृति चित्रण → इस युग के कवियो ने प्रकृति के मनोरम चित्र खीचे।

④ देश प्रेम की भावना → इस समय भारत परतन्त्रता की बेड़ियो मे बंधा हुआ था। अत: इस युग

(1

प्रश्न क्र. के कवियो ने देश-प्रेम भावना से युक्त कविताओं की रचना की है।

(5) खड़ी बोली का प्रयोग → कवियो ने ब्रजभाषा को छोड़कर इस युग में खड़ी बोली (का) प्रयोग से काव्य रचना को आलंकरित किया।

उत्तर - 2।

प्रगतिवाद छायावाद के बाद का युग है। इस युग का काल सन् 1936 - 1943 तक है।
"राजनीति में जो साम्यवाद है, साहित्य में वही प्रगतिवाद है।"

प्रगतिवाद की विशेषताएँ

→ शोषितो के प्रति सहानुभूति
→ आर्थिक समानता पर बल
→ कर्मवाद की प्रधानता
→ रूढ़ियों का विरोध
→ ईश्वर के अनास्था

(1) भाग्यवाद के स्थान पर कर्मवाद की प्रधानता → इस युग के कवियो ने भाग्यवाद के स्थान पर कर्मवाद मे बल दिया।

B
S
E

प्रश्न क्र.

(2) शोषितो के प्रति साहनुभूति व शोषको के प्रति विद्रोह - इस युग के कवि ने अपने काव्य मे शोषितो के प्रति साहनुभूति जताायी व शोषको का विरोध करते हुए काव्य रचना की।

(3) ~~स्म~~ आर्थिक समानता पर बल → इस युग के कवियो ने पूंजीवाद का विरोध किया व आर्थिक समानता पर बल दिया ताकि देश ~~के~~ में गरीबी कम हो जाये।

प्रगतिवाद के कवि व उनकी रचनाएँ

(1) नागार्जुन → युगधारा, सतरगी पंखो वाली.

(2) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला → कुकुरमुत्ता

(3) शिव मंगल सिंह सुमन → विश्वास बढ़ता ही गया

(4) सुमित्रानंदन पंत → युगवाणी

• लेखक परिचय

शरद जोशी

रचनाएँ → शरदजोशी जी ने कई गद्य की विधायो को अपनाकर रचनाएँ की हैं। उनकी प्रमुख रचना हैं :- अंधो का हाथी, एक था गधा, इल्लियों की जीप

कुल अंक

प्रश्न क्र.

भाषा → शरद जी की भाषा अत्यंत सरल व सहज है। आपने खड़ी बोली साहित्यक खड़ी बोली का भी प्रयोग अपनी रचनाओ में किया है। आपके वाक्य छोटे व सटीक है। मुहावरो का प्रयोग करके आपने अपनी रचनाओं को सजीवता प्रदान की है। शब्दो का चुनाव सटीक है। आपने संस्कृति शब्दों का प्रयोग किया है। उर्दू, फारसी, देशज, विदेशज आदि शब्दो का प्रयोग करके अपने भाषा को बोधगम्य बनाया है। आपकी रचनाओ में प्रवाह व सहजता है।

B
S
E

शैली → शरद जोशी जी की शैली व्यंग्यात्मक हैं। व्यंग्यात्मक शैली उनकी रचनाओ की प्रधानता है। व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करके आपने समाज मे व्याप्त कुरीतियो, अंधविश्वासो पर तीखे प्रहार किये है। इसके अलावा काव्यात्मक शैली के प्रयोग से आपकी रचना में सजीवता आ गयी है। आपने समीक्षात्मक, लक्षणात्मक, विवेचनात्मक शैली का भी प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान → जोशी जी एक बहुमुखी लेखक है। उन्होने हिन्दी साहित्य को अपनी कई रचनाओ व गद्य विधाओ से भर दिया है। वे एक महान लेखक थे। उनकी रचनाओ ने लोगो को देखने का एक नया नजरिया दिया है। इस कारण वे हिन्दी साहित्य के जगत मे सदैव स्मरणीय रहेंगे।

प्रश्न क्र.

उत्तर-23

मैथिलीशरण गुप्त

रचनाएँ → यशोधरा , पंचवटी , भारत-भारती , साकेत

भाव पक्ष → गुप्त जी एक देश प्रेमी कवि थे। उन्होने देश प्रेम से युक्त कई कविताएँ लिखि है। वे देश के सच्चे राष्ट्रभक्त थे। उनकी कविताओ मे ओज गुण की प्रधानता है। वे भारत की मिट्टी मे जन्मे थे व इस बात पर गर्व करते थे। भारत-भारती मे उन्होने भारत की महत्ता का वर्णन किया है। उनके अनुसार भारत एक महान देश है। यह भाव उनकी रचनाओ से भी स्पष्ट होता है। वे राष्ट्रकवि के नाम से जाने जाते है।
उनकी रचनाओ में वीर रस प्रधान है।

कला पक्ष → मैथिली जी की भाषा अत्यंत सरल व सुबोध है। उन्होने संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग किया है।
उन्होने दोहा, सोरठ, कवित्त, छप्पय आदि छंदो का प्रयोग किया है। रूपक, अनुप्रास, अन्योक्ति, श्लेष, यमक आदि अलंकारो से उन्होने काव्य रचना को अलंकरित किया है।

साहित्य में स्थान → मैथिलीशरण जी एक राष्ट्रप्रेमी कवि थे। वे बहुमुखी थे। उन्होने प्रबंध काव्य, मुक्तक काव्य दोनो की रचनाए की है। उन्होने लोगो को देश

प्रश्न क्र.

की रक्षा के लिए प्रेरित किया है। हमें शरण जी हिन्दी साहित्य में सदा स्मरणीय रहेगे। वे एक अमर कवि हैं।

उत्तर २५

मेरी किलकारियाँ ---------------- बजा रहा हूँ।

संदर्भ → प्रस्तुत गद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक के पाठ "तिमिर गेह के आंचरण" से अवतरित है, जिसके कवि डॉ श्याम सुंदर दुबे जी हैं।

प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश मे दुबे जी ने अपने बचपन की स्मृतियों को जाग्रत किया है। व स्मृति के सागर में वे डुबे हुए प्रतीत हो रहे हैं।

व्याख्या → स्मृतियों का महत्त्व बताते हुए कवि कहते हैं कि जब वे अपने गांव गये व जब उन्होने अपना घर देखा तो उन्हो अपने उनके सामने उनके अतीत के चलचित्र आने लगे। वे कहते है कि उनकी किलकारियाँ और रोदन, उनका क्रोध, उनका ममत्व उनके घर के भीतर अटके हैं। माता-पिता और बहिनो की आत्मीयता दरवाजे के भीतर से ही आने लगती है। उनका अतीत धीरे-धीरे उनके सामने आने लगा, जिस तरह घर का ताला खोल खुलता गया। उन्हे घर खोलने मे आधा घंटा लग गया। घर के साथ-साथ उनकी दबी हुई स्मृतियाँ, मधुर बचपन भी

प्रश्न क्र. खुलता जा रहा था।

विशेष → ① सरल व सहज भाषा।
② संस्कृतनिष्ठ शब्दो का प्रयोग।

उत्तर - २S

मैया - लोटी॥

संदर्भ → प्रस्तुत पद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक के पद्य खंड के पाठ वात्सल्य व स्नेह के शीर्षक सूर के बालकृष्ण से अवतरित है, जिसके कवि सूरदास जी है।

प्रसंग → प्रस्तुत पद्यांश मे श्रीकृष्ण यशोदा माँ से पूछ रहे है कि उनकी छो चोटी अभी भी छोटी है वह कब बढ़ेगी।

व्याख्या → सूरदास जी श्रीकृष्ण की बचपन का वात्सल्य ढंग से चित्रित चित्रित करते हुए कहते है कि श्रीकृष्ण माँ यशोदा से पूछ रहे है कि मैया मेरी चोटी कब बढ़ेगी। तूने तो कहा था कि अगर मैं दूध पिऊंगा तो मेरी छोटी जल्दी बढ़ेगी लेकिन ये तो अभी भी छोटी है।
तूने तो कहा था कि मेरी चोटी बलदाऊ की तरह लंबी व मोटी हो जायगी परन्तु यह तो छोटी है। मेरा तेरे अनुसार तो मेरी चोटी कंघी करते समय, नहाते समय, व गुथते समय नागिन की तरह लोटेगी। पर यही तो अभी तक छोटी व पतली है।

प्रश्न क्र. विशेष श्री कृष्ण की बाललीलाओं का मनोरम वर्णन
(2) ब्रजभाषा का प्रयोग।

उत्तर-26

i) गद्यांश का उचित शीर्षक → हिमालय की महत्ता

ii) वैदिक काल से ही हिमालय को पवित्र माना जाता है।

iii) हिमालय को देखकर ऐसा लगता है मानो यह सृष्टि ईश्वर की देन है। सारी सृष्टि के प्रति सम्भावना जाग्रत होती है।

iv) हिमालय यहाँ बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री तीर्थ है।

v) (1) कृतज्ञता → प्रत्यय → ता
(2) वैदिक → इक

प्रश्न क्र.

उत्तर 27

राधास्याम कॉलोनी,
वैद नगर,
हाउस नं०-5
भोपाल (म०प्र०)।
दिनांक - 02/03/19.

प्रिय मित्र राम,

आशा करती हूँ कि तुम सकुशल हो। मैं भी कुशल हूँ। मैंने कल अखबार में तुम्हारा नाम देखा, जब मैंने उस खबर को पढ़ा तो मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि तुमने राज्य स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आर्जित किया है। तुम्हे ढेरो बधाई। मैं तुम्हारे उज्वल भविष्य की कामना करती हूँ। तुम इसी तरह अपनी भाषण कला से सबको जाग्रत व प्रेरित करते रहो। मैं तुम से मिलने जल्द ही आऊँगी और मिठाई भी खाऊँगी।

आँटी-अन्कल को मेरा सादर प्रणाम देना व खुशी, अजय को प्यार। उम्मीद करती हूँ सब वहां स्वस्थ्य व खुश होंगे। तुम्हारे भविष्य की उज्वल कामना करती हूँ। तुम मुझे पत्र भेजकर अपनी खबर देना। शेष मिलने पर।

तुम्हारी मित्र,
अ.ब.स।

BSE

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

उत्तर - 28

नारी है तो कल है

रूपरेखा → i) प्रस्तावना
ii) वैदिक काल मे नारी
iii) मध्यकाल मे नारी
iv) आधुनिक नारी
v) महिलाओ की दयनीय दशा के कारण
vi) विकास के लिए कदम
vii) हर क्षेत्र मे नारी
viii) उपसंहार

B
S
E

(1) प्रस्तावना → नारी है तो कल है। नारी के बिना यह जग सूना है। बिना नारी के सभ्यता का विकास सम्भव नही है। कोई भी देश बिना नारी के आगे नही बढ़ सकता न ही विकास कर सकता है। नारी ही वंश को आगे बढ़ाती है तो फिर हम नारी पर जुर्म क्यो करते है? क्यो उसे ही बेड़ियो में जकड़ के रखते है? हमे यह बात अपनानी होगी कि बिना नारी के कोई भी देश विकास के पथ मे आगे नही बढ़ सकता।

(2) वैदिक काल की निर्भय नारी → यह सर्वमान्य है कि नारी की स्थिति वैदिक काल मे सबसे अच्छी थी। वैदिक काल की नारियाँ पुरषो के समान थी। केकई ने युद्ध भूमि में राजा दशरथ की मदद की थी। अनुसुइया, कुंती, द्रोपती आदि नारियाँ

पृष्ठ क्रमांक

प्रश्न क्र.

वैदिक काल की निर्भय नारी है। वेदो मे भी यह बात लिखी है कि नारी वैदिक कालमे मे नारियों की सबसे अच्छी दशा थी।

(3) मध्यकाल की भयभीत नारी → मध्यकाल के आते-आते पुरुषो ने नारियों की दशा दयनीय बना दी। इस समय तक समाज पुरुष प्रधान हो चुका था। पुरुषो ने महिलाओ पर जुर्म करना प्रारंभ कर दिया व उनके सभी अधिकार उनसे छीन लिये। मध्यकाल मे नारी वासनपूर्ति का साधन मात्र रह गयी थी। फिर भी इस समय रानी लक्ष्मी बाई जैसी नारियो ने देश की स्वतंत्रता के लिये लड़ाई की।

(4) आधुनिक नारी → आधुनिक काल की नारियाँ पुनः अपने पैरो मे खड़े होकर अपने अधिकार के लिए लड़ रही हैं। वे आत्मनिर्भर बनकर हर क्षेत्र मे पुरुषो के समकक्ष होकर खड़ी हैं। वे अपने अधिकारो के प्रति सजग है, फिर भी आज पुरुष प्रधान समाज उनकी आवाज दबाने की कोशिश मे रत हैं।

(5) महिलाओ की ~~दुर्दशा~~ ~~इस~~ दयनीय दशा के कारण → समाजवादी नारियो के अनुसार नारियाँ पैदा नहीं होती उन्हे बना दिया जाता है। एक नारी को जीवन देने का अधिकार है परन्तु उसे खुद का जीवन जीने का अधिकार नहीं है। महिलाओ की दयनीय दशा के कारण :-

1) पुरुष प्रधान समाज → ~~पु~~ महिलाओ की जैव प्रजनन क्षमता

प्रश्न क्र.

का फायदा उठाते पुरुषो ने समाज मे अपना सम्प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

ii) हिंसा → महिलाओ के साथ हर जगह हिंसक व्यवहार किया जाता है, उसे वासनपूर्ति मात्र का साधन समझा जाता है।

iii) अशिक्षा → आज भी कुछ घरो मे नारियो को शिक्षा पाने का अधिकार नही है वे अशिक्षित है इस कारण उन्हे अपने दूसरो के ऊपर अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए निर्भर रहना पड़ता है।

B
S
E

(6) महिलाओ की स्थिति सुधारने के लिए भारत सरकार द्वारा उठाये गये कदम

i) संवैधानिक → महिलाओ को भी पुरुषो के समकक्ष खड़ा करने के लिए भारत की सरकार ने नारि-नारियो को संवैधानिक व अधिकार प्रधान किये है।

ii) महिला आयोग का गठन भारत की सरकार ने महिलाओ की स्थिति सुधारने के लिए सन् 1990 मे 'राष्ट्रीय महिला आयोग' की स्थापना की है।

iii) राजनैतिक क्षेत्र → राजनैतिक क्षेत्र में महिलाओ की भूमिका बढ़ाने के लिए लोक

प्रश्न क्र.

सभा में 1/3 सीट महिलाओ के लिए आरक्षित की जाती है।

iv) शोषण के विरुध आवाज → महिला सुरक्षा का ध्यान रखना सरकार का महत्वपूर्ण कार्य है। महिलाओ को बलात्कार, हिंसक गतिविधियों से बचाने इसके लिए देश में कड़े कानून बनाये गये है।

(7) हर क्षेत्र में महिला के बढ़ते कदम → हर क्षेत्र मे महिलाओ के महिलाये अपनी कला का अद्भुत प्रदर्शन कर रही है।

i) राजनैतिक महिलाएँ → सरोजनी नायडू, प्रतीभा देवी सिंह पाटिल, इंदिरा गाँधी आदि

ii) संगीत के क्षेत्र में महिलाएँ → लता मंगेशकर, श्रेया घोसाल

iii) खेल के क्षेत्र मे → सानिया मिर्जा, सानिया नेहवाल, पी.वी सिंधु, मिताली राज।

iv) साहित्य के क्षेत्र मे → महादेवी वर्मा, उषा प्रियवेदा

सब क्षेत्र मे नारी का प्रदर्शन श्रेष्ठ है। अत: अब हमे नारियो को आगे बढने का मौका देना चाहिए

"आज की नारी
सब पें भारी।"

प्रश्न क्र.

उपसंहार → नारी की रक्षा करना हर देश का परम् धर्म है। अतः हमे नारियों की सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए। तभी हमारा देश व संसार विकास कर पायेगा।

"नारी है तो कल है
नारी बिना सूना ये जग है।"

B
S
E

उत्तर ब

२ ब)

~~स्वच्छता~~ जल संरक्षण

i) प्रस्तावना।

ii) जल का महत्व।

iii) जल की आवश्यकता।

iv) जल प्रदूषण की गंभीर समस्या।

v) जल के विभिन्न स्त्रोत।

vi) जल संरक्षण की आवश्यकता।

vii) जल संरक्षण के उपाय।

viii) उपसंहार।